

माटी के पुतले रे,
तेरा अपना यहाँ नहीं कोय,
तेरा अपना यहाँ नहीं कोय,
सतगुरु ने कितना समझाया,
अब काहे को रोए रे,
ऐ अब काहे को रोय,
तेरा अपना यहाँ नही कोय,
माटी के पुतले रे ॥

तर्ज पिंजरे के पंछी रे।

भूखा प्यासा रह कर तू ने,
करदी न्योछावर,
ये जिन्दगानी रे,
जिसकी खातिर महल बनाया,
जिसकी खातिर महल बनाया,
वो ही न तेरा होय,
तेरा अपना यहाँ नही कोय,
माटी के पुतले रे ॥

करले जो भी करना है तुझको,
समय सुहाना बिता जाए रे,
चला गया ये समय तो पगले,
चला गया ये समय तो पगले,
फिर वापस न होय,

तेरा अपना यहाँ नहीं कोय,
माटी के पुतले रे ॥

खुद के लिए कुछ कर ले कमाई,
बीत रही तेरी जिन्दगानी रे,
कल कल में जीवन कई बीते,
कल कल में जीवन कई बीते,
कल न तेरा होय,
तेरा अपना यहाँ नहीं कोय,
माटी के पुतले रे ॥

माटी के पुतले रे,
तेरा अपना यहाँ नहीं कोय,
तेरा अपना यहाँ नहीं कोय,
सतगुरु ने कितना समझाया,
अब काहे को रोए रे,
ऐ अब काहे को रोय,
तेरा अपना यहाँ नहीं कोय,
माटी के पुतले रे ॥

– भजन लेखक एवं प्रेषक –
श्री शिवनारायण वर्मा,
मोबा.न.8818932923

वीडियो अभी उपलब्ध नहीं ।

<https://www.bharattemples.com/mati-ke-putale-re-tera-apna-yaha-nahi-koi/>



Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans>

Facebook: <https://www.facebook.com/bharattemples/>

Telegram: <https://t.me/bharattemples>

Youtube: <https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw>